SHRI MURASOLI MARAN: I am not talking about the hospitality here. I am *talking* about the language problem. The problem is language and we cannot understand Hindi. (*Interruptions*).

SHRI VIRENDRA VERMA: Please **try to understand** every language. (***Interruptions***).

MR. CHAIRMAN: Mr. Buta Singh, I think you are inviting only trouble for yourself. I will now move on to the next question. Now, Question No. 263. Mr. Puglia. Not here.

*263. [*The questioner (Shri Naresh C. Puglia) was absent. For answer,* vide *col.* 30 infra].

MR. CHAIRMAN: Now, Question No. 264. Mr. K. K. Birla.

Illegal poaching of protected animals in Dudhwa Wildlife National Park

*264. SHRI KRISHNA KUMAR BIRLA: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) whether Government are aware of the threat to the tigers in Dudhwa Wildlife National Park which are being gradually exterminated by the poachers and also of the systematic destruction of the ecology of the National Park by illegal felling of trees;

(b) if so, what is the number of tigers and other protected animals in the Park killed by the poachers during the last three years, yearwise;

(c) what is the estimated area affected by the illegal felling of trees; and

(d) whether Government have made any investigation into the matter; if so, what is the outcome thereof and the steps contemplated to remedy the situation?

THE MINISTER OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI BHAJAN LAL): (a) Reports alleging poaching of tigers and illict felling of trees in the Dudhwa National Park have been received. The State Government of Uttar Pradesh has reported that there is no poaching in the Park but that a part of the Park is affected by illegal felling of trees.

(b) No tiger or other protected animal has been killed by poachers in the park during the last three years. However, one tiger has died in January, 1987 due to poisoning.

(c) The State Government has reported that about 10 sq. kms. of the Dudhwa National Park is affected by the illegal felling of trees.

(d) Inquiry has been made with State Government which have replied as in (a) above. The State Government have been advised to take effective measures to control the illegal felling of trees in the Dudhwa National Park. The Central Government is providing financial assistance for the protection of the Dudhwa National Park.

श्री कृष्ण कुमार बिरला : मान्यवर, विश्वस्त सूत्रों के अनुसार आठ महीनों में 15 शेरों की हत्या कर दी गई है। मंत्री जी ने यह कहा कि एक भी शेर नहीं मारा गया है लेकिन अखबारों में छपी खबरों के अनुसार 15 शेर मारे गये तथा जंगल के अधिकारियों का यह कहना है कि कुछ शेरों ने आत्म-हत्या कर ली है जो आज तक कभी सुनी भी नहीं गई है (व्यवधान) इससे बढ़कर के और बहानेबाजी नहीं हो सकती है। लापरवाही जंगल के अधिकारियों की और दोष मढ़ देते हैं शेरों के ऊपर। दरअसल में वास्तविक चीज यह है कि शेरों की खाल, खोपड़ी और हड्डी इन के दाम बहुत ऊचे होते हैं और उसमें बड़ा अवैध व्यापार चल रहा है। जब तक यह अवैध व्यापार खत्म नहीं होगा तब तक शेरों की हत्या बंद नहीं होगी। मैं मंत्री जी से यह प्रश्न पूछना चाहता हूं कि वे इस अवैध व्यापार को रोकने के लिए क्या उपाय सोच रहे हैं?

श्री भजन लाल : यह मैंने नहीं कहा था कि शेर मारे नहीं गये थे। मैं बिरला जी को बताना चाहता हूं कि शेर जो मरे हैं वे टोटल से 13 मरे हैं, 15 नहीं जो हमारे पास रिपोर्ट है। लेकिन जो पार्क के एरिये में मरे हैं उनकी संख्या 3 है और बाकी 3 शेर जो मरे हैं उनमें एक तो रेल से कटकर मरा है, एक शेर जहर देने से मरा है, एक आपस की लड़ाई से मरा है और 7 शेर जंगल के एरिये में नहीं, जो नेशनल पार्क है उसके एरिये में नहीं बल्कि बाहर गन्ने के खेतों, सरसों के खेतों में मरे हैं। हो सकता है कि उनको शिकारियों ने मारा हो। सरकार ने कोशिश करके 5 शेरों की हड्डियां बरामद की हैं, दो शेरों की बाडी बरामद की है और उन लोगों को पकड़ा है, बाकायदा उनके खिलाफ कोर्ट में केस चल रहे हैं।

श्री कृष्ण कुमार बिरला : मान्यवर, यू.पी. में और भी पार्क हैं, मैं उन सभी पार्कों में गया हूं। राजाजी पार्क, कार्बेट पार्क, इनमें कोई शिकायत नहीं आती कि शेरों ने आदमियों को मार डाला या आदमियों ने शेरों को मार डाला। ऐसी शिकायत नहीं आती है, यह दुधवा पार्क में ही क्यों शिकायत आती है। मैं मंत्री जी से यह प्रश्न पूछना चाहता हूं कि वे गहराई में जाकर इस चीज को जांचने की चेष्टा क्यों नहीं करते हैं कि शेर यहीं पर क्यों मारे जाते हैं?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, जहां तक बिरला साहब ने कहा है कि दुधवा में ही ऐसा क्यों होता है, बाकी जगह कोई शिकायत नहीं है तो दुधवा की शिकायत है इसमें कोई दो राय नहीं है क्योंकि आबादी के हिसाब से दुधवा में शेरों की तादाद ज्यादा है, तकरीबन 70 और 80 के बीच में शेर हैं। वहां कुल एरिया 430 वर्ग किलोमीटर है और इसमें से 123 किलोमीटर बफर में है। इस हिसाब से अंदाज जो हमारा एवरेज है वह 28 और 30 किलोमीटर के एरिये में एक शेर होना चाहिए लेकिन यहां एरिये के हिसाब से शेर ज्यादा होने की वजह से बाहर निकल गये हैं और इन शेरों ने तकरीबन 170 आदमियों की पिछले 8-10 साल में हत्या कर दी है, इस वजह से हो सकता है कि लोग जहर देते हों या और तरीकों से मारने की कोशिश करते हों जो शेर बाहर निकल आते हैं। लेकिन हमने स्टेट गवर्नमेंट को लिखा है इसके लिए कि पूरा इंतजाम किया जाये, उन्होंने बाकायदा गश्त तेज की है देखभाल कर रहे हैं भारत सरकार की तरफ से उनकी सहायता पहले से की जा रही है ताकि उसमें बाड़ आदि लगायी जा सके, कांटेदार तार लगाये जा सकें और उनकी देखभाल के लिए भारत सरकार की तरफ से पूरी सहायता की जायेगी ताकि भविष्य में किसी शेर की मृत्यु न हो।

श्री सत्यपाल मलिक : श्रीमन्, मैंने कहीं पढ़ा था एक बार जो आखिरी वायसराय थे उन्होंने जिम कारबेट से पूछा कि कितने शेर हैं देश में, उन्होंने बताते हुए कहा कि शेर तो बहुत हैं लेकिन आप चले जायेंगे तो ये कम रह जायेंगे। उन्होंने जानना चाहा क्यों? तो उन्होंने कहा इसलिए कि इन बेचारों की वोट नहीं है और लीडरों को इनका शौक कम है। बाद मे यह साबित हुआ कि उनकी बात सही नहीं थी, सरकार ने बहुत काम किया है इस सिलसिले में। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि दुधवा की शिकायत नया नहीं है बहुत पुरानी है और जिन हालात में इतनी बड़ी तादाद में शेर एक साथ अभी मरे हैं, वह एक बहुत गम्भीर बात की तरफ इशारा करती है।

मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि किस एजेंसी ने इन शेरों की मृत्यु के मामलों की जांच की है, कितने मामलों में उन आदमियों, जिन पर शुबह हुआ है कि इन्होंने मारे हैं, उन पर मुकदमे दर्ज हुए हैं या जांच चल रही है? कितने लोग पकड़े गये हैं और क्या आप जांच से सतुष्ट हैं? मैं यह भी निवेदन करूंगा कि यदि सम्भव हो, तो यह जांच सी०बी०आई० को सौंपने की कृपा करें।

श्री भजन लाल : महोदय, जहां तक जांच का ताल्लुक है, हमने स्टेट

गवर्नमेंट को लिखा और उन्होंने पूरी जांच करना सी० आई० डी० के जिम्मे लगाई है। पांच शेरों की हड्डियां एक ट्रक से बरामद की गई थीं। इसमें दो नाबालिग बच्चे थे, उनको पकड़ा गया जो ट्रक में ले जा रहे थे। लोअर कोर्ट ने उनको छोड़ दिया, लेकिन हमने उनकी बाकयदा अपील ऊपर की कोर्ट में कर रखी है। बाकी जिन दो शेरों की जो बाडी बरामद की है, उन दो लागों के खिलाफ कोर्ट में केस चल रहा है।

SHRI K. G. MAHESWARAPPA: Sir, all those who are interested in preserving the wild life are very much concerned that not only the tigers are killed but there is also the poaching of elephants, particularly...

MR. CHAIRMAN: No, no. You must confine to tigers and not elephants.

SHRI K. G. MAHESWARAPPA: ....in Karnataka.

MR. CHAIRMAN: The question was confined to tigers.

SHRI K. K. MAHESWARAPPA: Sir, it is relating to wild animals...

MR. CHAIRMAN: He cannot answer all the questions. Now, Mr. Kapil Verma.

SHRI KAPIL VERMA: Sir, there were some press reports...

SHRI K. G. MAHESWARAPPA: Sir, I have not yet finished (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Mr. Kapil Verma, you please sit down.

SHRI KAPIL VERMA: He can ask about paper tigers, if he wants.

SHRI K. G. MAHESWARAPPA: I will confine myself to tigers.

MR. CHAIRMAN: Now you will address yourself to the tigers.

SHRI K. G. MAHESWARAPPA: Sir, the predecessor Minister promised to provide special funds to combat poaching to the States. I want to know whether any concrete steps have been taken by the Central Government to provide funds to combat this menace of poaching in the States.

श्री भजन लाल: सभापति महोदय, सातवीं पंच वर्षीय योजना में 10 करोड़ 63 लाख रुपया हमने रखा है ताकि जितने अभ्यारण्य हैं उन पर पैसा खर्च करके नेशनल पार्क में पूरी व्यवस्था की जाए और इंतजाम किया जाए कि कोई आदमी इनका शिकार नहीं कर सके। इनके बचाव के लिए, जैसा कि मैंने पहले कहा, गश्त को भी हमने तेज किया है, काटेदार तार लगाने का प्रोग्राम बनाया है, स्टेट गवर्नमेंट को लिखा है कि आपको किस-किस बात की आवश्यकता है, आप इसका पूरा प्रोग्राम डिटेल्ज में हमारे पास भेजें ताकि भारत सरकार सौ फीसदी ग्रांटस प्रांतीय सरकार को देती है। जिन चीजों की उनका आवश्यकता होगी, उसके लिए सौ फीसदी ग्रांट हम उनको देंगे ताकि इन नसलों को बचाया जा सके।

SHRI KAPIL VERMA: Sir, about a year ago, there were reports in the press that a very senior officer of the State Government was found attempting poaching in Dudhwa National Park. Is it within the notice of the Government of India, and if so, what action was taken against him?

श्री भजन लाल : सभापति जी उसकी डिटेल तो मेरे पास नहीं है लेकिन इतना ही मैं कह सकता हूं कि किसी अफसर ने अगर कोताही की है और उसका कसूर है, तो भारत सरकार उसको माफ नहीं करेगी, चाहे काई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो।

श्री वीर भद्र प्रताप सिंह: सभापति महोदय, मुझे किसी ने बताया है कि दुधवा पार्क जो उत्तर प्रदेश में स्थित है, उसके सिंह अब शाकाहरी हो गये हैं और घास खाने लगे हैं इसलिए अधिक मृत्यु हो गई है। क्या ऐसा कुछ तो नहीं है?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, अब घास खाते शेरों को इन्होंने देखा हो तो हो, मैंने तो देखा नहीं। यह बीमारी की वजह से भी मर सकते है। कई बार पोस्ट-मार्टम में यह आया भी है कि पेट में जहर होने की वजह से शेर की मृत्यु हो गई और आपस में लड़ कर कोई एक पानी में भी गिर कर डूब कर मर गया । ऐसा तो हो सकता है, लेकिन घास के बारे में ... **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : बुढ़ापे में खाते है।

एक माननीय सदस्य : नहीं कभी-कभी खाता है ।

श्री भजन लाल : कभी-कभी खाता होगा जरूर... **(व्यवधान)**

MR. CHAIRMAN: Mr. Singh, You can go to the Park if they are starving.

SHRI V. GOPALSAMY : Mr. Chairman, Sir, I am very glad that our Hon. Mr. Bhajan Lal is in charge of tigers. Sir, may I ask in a lighter vein whether all the tigers will be brought to Haryana and let loose during election time?

MR. CHAIRMAN : Mr. Ratnakar Pandey.

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, हरियाणा में पहले ही इतने बाघ है इतने शेर हैं कि उनका कंट्रोल करना मुश्किल हो रहा है ।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : माननीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि बनारस के नवगढ़ और मिर्जापुर के सैकड़ों मील के जंगल में क्या भारत सरकार के पास जो वहां के वन्यजीव है, यह बड़ा पुराना जंगल रहा है और उस पर हिन्दी के बड़े भारी उपन्यासकार ...

MR. CHAIRMAN : No, no, this question relates only to Dudhawa Park.

श्री एन० के० पी० साल्वे : मान्यवर, आज तक तो यही सुना था कि इंसान ही आपस में लड़ते हैं लेकिन अभी पता चला कि शेर भी आपस में लड़ने लगे हैं, जैसा कि बताया गया कि वे भी लड़ते हैं । मान्यवर, हरियाणा में शेर हैं या नहीं यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन मंत्री जी को मैं हरियाणा का एक शेर समझता हूं । मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि शेरों को इस तरीके से जहर दे देकर जो मारने का दुरुप्रयोग किया जाता है वह उसके चमड़े की तिजारत के लिए किया जाता है । अखबारों में भी आया है कि पार्क में शेरों की तादाद बढ़ गई है । तो मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इनको खुद विदेश में या हिन्दुस्तान में अलग-अलग जूज में शेर क्यों नहीं देते ? अगर फिर भी तादाद ज्यादा हो तो बाहर इसका निर्यात क्यों नहीं करते ? लंदन में आपने भी देखा होगा, मान्यवर, किस तरीके से जानवरों की परवरीश की जाती है ? यह देखने लायक चीज है । वहां मैंने जब पुछा कि उनके पास भारत का कोई शेर है तो उन्होंने कहा कि नहीं । इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि इन्हें आप कम से कम हिन्दुस्तान के जूज को क्यों नहीं देते जहां पर जाकर इन्हें बच्चे देखते हैं ? अगर इनकी तादाद किसी जगह ज्यादा है तो जीते-जागते शेरों का निर्यात करें ?

श्री भजन लाल : : सभापति महोदय, मुल्क में शेरों की तादाद कोई बहुत ज्यादा नहीं है । इतना बड़ा हमारा देश है और यहां पर तकरीबन चार हजार शेर हैं । इनका निर्यात करने के बारे में अभी कोई विचार नहीं किया गया । यह ठीक बात है, साल्वे साहब ने कहा कि खाल की वजह से भी कुछ लोग इनका शिकार करते हैं । एक-एक लाख रुपये तक खाल बिकती है ?।

SHRI GHULAM RASOOL MATTO: Mr. Chairman, Sir, may I ask whether by "shaer" he means a lion or a tiger?

श्री भजन लाल: टाइगर और शेर एक ही बात है, कोई अंतर नहीं है । इसी तरह से हड्डियां भी चाइना में जाकर के उनकी भी दवाई बनती है । इसलिए शेरों की हड्डियां तक का भी

इस्तेमाल करने की कोशिश लोग करते हैं। लेकिन ज्यादा कारण यही होता है कि जब वे खेतों में बाहर निकल जाते हैं और लोगों को खा जाते हैं, जैसा मैंने कहा कि 170 के करीब आदमी मारे गए शेरों की वजह से, जिन्हें कि शेर खा गए। इसलिए हो सकता है कि उनको जहर भी दिया गया हो और उनका शिकार भी किया गया हो। जहां तक जूज में रखने का सवाल है वहां पर तो हैं ही लेकिन यदि कहीं नहीं हैं और जहां पर कि जू में उनको रख सकते हैं वहां पर जू में रखने की कोशिश करेंगे।

*265. [*The questioner (Shri Sharad Yadav) was absent. For answer, vide col.* 31 infra].

Watering of plants under social forestry schemes

*266. SHRI AJIT P. K. JOGI: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) whether Government are aware that in certain parts of the country wherein the plantation is done under the social forestry schemes, the survival rate of the plants is extremely low because there is absolutely no provision in such schemes for watering these plants at least during the summer months *i.e.*, the period when most of the plants die out; and

(b) if so, whether Government propose to make suitable provision for watering/irrigation in the social forestry schemes to avoid colossal loss of money and effort in this direction?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI Z. R. ANSARI): (a) Government are aware that survival rate of seedlings in social forestry plantations in certain parts of the country on degraded sites is low the low survival rate is not any due to insufficient moisture but poor physical structure of the soil, low fertility of the degraded land, lack of protection against grazing by cattle and insect/pest damage. There is no specific provision exlusively for watering seedlings in the social forestry scheme;

(b) Government does not propose to take any exclusive provision for watering in the social forestry schemes as it is not practical and lack of watering is not the only reason for low survival rate where such rate is low.

श्री अजीत जोगी : मान्यवर, पेड़ लगाना बहुत आसान है, किन्तु उसकी रक्षा करना, उसको बड़ा करना कठिन काम है। सामाजिक वानिकी योजना के अंतर्गत जो पेड़ लगाए जा रहे हैं ऐसे क्षेत्रों में, जो उनके परिणाम हम लोगों ने देखें हैं, उससे यह स्पष्ट होता है कि इन पेड़ों की जो सरवाइवल रेट है उसकी संख्या बहुत ही कम है। मंत्री जी ने अपने उत्तर में कहा है कि केवल गरमी के दिनों में सिचाई का पानी न मिलने के कारण ही यह ऐसा नहीं है, दूसरे अन्य कारण भी हैं। अभी पिछले दिनों में मध्यप्रदेश के पश्चिमी जिलों में सामाजिक वानिकी के कार्यों को देख रहा था और ऐसा प्रतीत होता है कि यदि बहुत अच्छी जमीन में लगाए गए...

MR. CHAIRMAN: Mr. Jogi, everytime you are delivering a lecture and don't put a question. Please write your questions hereafter and put them.

श्री अजीत जोगी : Yes, Sir, मैं यह जानना चाहता हूं कि जो पेड़ लगाए गए है, उन पर सिंचाई की व्यवस्था इसलिए नहीं की जा सकी है क्योंकि प्रति हेक्टेयर जो राशि सामाजिक वानिकी कार्यों के लिए स्वीकृति की गयी है, वह इतनी नहीं है कि उससे सिंचाई की व्यवस्था हो सकती हो। कम से कम ऐसे क्षेत्रों में जहां अच्छी भूमि पर और जहां पर सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं, सरकार अपने मापदण्डों में संशोधन करेगी और कम से कम क्षेत्रों में सिंचाई के लिए राशि व्यय करने की अनुमति देगी, जिससे इन पेड़ों की सुरक्षा हो सके और वे बच सकें ?